Assignment Subject: - Hindi Class: - IV Teacher: - Ms. Jitender Kaur

Name: _____ Class & Sec: _____ Roll No. ____ Date: 30.03.2020

प्रवा संज्ञा की पश्चिमापा तथा उसके चेद किखी :-परिमाषा - किसी वस्तु, स्थान, प्राणी या माव के नाम की 36 यांचा कहते हैं। व्यंता के और जा तवाचक 'माववाचका 1. ट्याक्तवाचक कंगा - जिन संज्ञा ठाळ्दों से किसी विशेष व्यक्ति, द्वान अपन अपन करते का जांचा हो, उसे व्यक्तितवाचक कंगा करते हैं। असे - का) ताजमरल आगरा में है। या श्रीमनेता है। या) कुतुबमीनार दिन्ती में है। व्यान की पूरी ज्यात था की का बाध हो, उसे ज्यातिवासक संभान की पूरी ज्यात था की का बाध हो, उसे ज्यातिवासक संभा कहते हैं। जैसे - का) राषी सर्वोवर में नरा रहा है। या) बनी पिल्म देख यह है। 3. नाववाच्या वंका - रेजन संना ठाळ्यों से रेजसी वस्तु; प्राणा, व्याकत तथा कथान के गुण - दोष , अवस्था तथा केवमाव आदि का कोंघ होता है, उसे नाववावन कंडना कहते हैं।

	असे - का) ग्रान्ते में निर्धास कार है। व्या) व्यवसे प्रेम की वीली, ग्रा) कामरे की लंबाई तथा चौड़ाई	नापो ।	
	ा. भीचे दिए काब्दों से संज्ञा ठाठद होटकर सटी जमर पर जिस्विए।		
T.			
	उड़ान, नर्मदा, निर्धियाद्यर, तीता, निरम्बादर, आहर्सा, व्यद्भ, निर्मिता, मिर्यादा, आहर्सा, व्यद्भ,		
	ट्याक्सवाचक संस्ता जातिकाचक संस्ता	°मानुवाच्या संस्ता	
2.	व्यास्त्रा कार्यों को वेसंप्राक्ति कार्यः-		
टमा,	लालिका दिली में है।		
रुख .	निवंबा सारत की गान है।		
	संदुधित मोजन करना चाहिए।		
च ।	सीचन तेंकुलकर प्रसिद्ध विवलाड़ी है।		